Extension Bulletin : 80/2020

भाकृअनुप
ICAR

करण नरेन्द्र (डीबीडब्ल्यू 222)
KARAN NARENDRA (DBW222)

सिंचित दशाओं में समय से बुआई के लिए गेहूँ की नई प्रजाति

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजनों को छोड़कर) पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मंडल को छोड़कर), हिमाचल प्रदेश (ऊना व पाटा घाटी), जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्सों (जम्मू और कठुआ जिले) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र)

WHEAT VARIETY FOR IRRIGATED TIMELY SOWN CONDITIONS FOR

Punjab, Haryana, Delhi, Rajasthan (except Kota and Udaipur divisions) and Western UP (except Jhansi division), parts of J&K (Jammu and Kathua distt.) and parts of HP (Una dist. and Paonta valley) and Uttarakhand (Tarai region)

Compiled and Edited
CN Mishra, Amit Sharma, Hanif Khan, Satish Kumar, SK Singh, Om Prakash, Madan Lal and GP Singh

ICAR-Indian Institute of Wheat and Barley Research
Karnal-132001, India

भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल-132001, हरियाणा

करण नरेन्द्र
(डीबीडब्ल्यू 222)

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता

(उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र)

केन्द्रीय किस्मों की विमोचन एवं उप समिति द्वारा विमोचन संख्या एस. ओ. 99 (ई) दिनाँक 06 जनवरी 2020 को गेंहू की करण नरेन्द्र (डीबीडब्ल्यू 222) किस्म को उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्रो (पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजनों को छोड़कर) पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मंडल को छोड़कर), हिमाचल प्रदेश (ऊना व पाटा घाटी), जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्सों (जम्मू और कठुआ जिले), और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) के सिंचित क्षेत्रो में समय से बुआई के लिए ऊपयूक्त भारत के राजपत्र द्वारा अधिसूचित किया गया है।

डीबीडब्ल्यू 222 की उत्पादकता

- इस किस्म की औसत उपज 61.3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है जो एचडी 2967 से 13 प्रतिशत, डीबीडब्ल्यू 88 से 9.4 प्रतिशत एवं एचडी 3086 से 4.0 प्रतिशत अधिक है।
- इस किस्म की उत्पादन क्षमता 82.10 कु./है.
- देरी से बुआई करने पर भी इस किस्म की उत्पादन क्षमता मे अन्य किस्मों की तुलना मे बहुत कम अंतर पाया गया है

रोग प्रतिरोधिता

यह किस्म पीले रतुआ की सभी प्रमुख रोगजनक प्रकारो के लिए प्रतिरोधकता के साथ साथ भूरा रतुआ रोग के लिए भी पूर्ण प्रतिरोधी पायी गयी है।

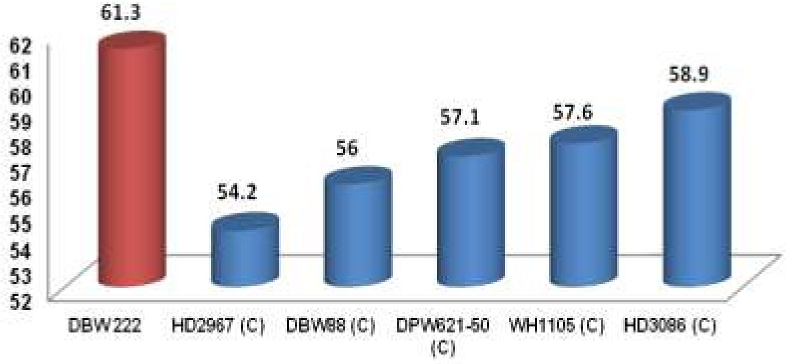

इस किस्म मे करनाल बंट (9.1 प्रतिशत) एवं खुला कंडुआ (कंगयारी) (4.9 प्रतिशत) रोगो के प्रति अत्यधिक रोग रोधिता प्राप्त हुई है।

दानो की गुणवत्ता

इस किस्म के दानो का उत्तम रोटी अंक (7.5) के साथ साथ अधिक रोटी फुलाव आयतन (648), ब्रैड गुणवत्ता (8.24) तथा बिस्कुट फैलाव गुणांक 8.45 सेमी पाया गया गई जो की इस किस्म की उच्च गुणवत्ता को दर्शाता है।

इस किस्म के दानो मे 10 की ग्लू स्कोर वाली उच्च गुणवत्ता की प्रोटीन होती है।

डीबीडबल्यू 222 (कारण नरेंद्र) किस्म के उत्पादन की सस्य क्रियायें

1.	भूमि का चुनाव एवं तैयारी	समतल उपजाऊ मिट्टी का चुनाव करके, जुताई पूर्व सिचाई के बाद उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी के लिए डिस्क हैरो, टिलर और भूमि समतल करने वाले यंत्र के साथ जुताई करके खेत को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए ।
2.	बीज उपचार	विटावैक्स (कार्बोक्सिन) नमक कवकनाशी की 2.0 ग्राम/किलोग्राम बीज से उपचरित करना चाहिए ।
3.	बुआई का समय	5-25 नवम्बर
4.	बीज दर और अंतराल	कतारों मे बुआई के लिए 40 किलोग्राम/एकड़ मात्र। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से.मी. तथा पौधे से पौधे के बीच की दूरी 5 से.मी. रखनी चाहिए ।
5.	उर्वरको की मात्रा	मध्य उर्वरता वाली भूमि में 120-150 नत्रजन : 40-60 फॉस्फोरस : 40 पोटाश प्रति हेक्टेयर। उर्वरकों का उपयोग मृदा की जाँच के बाद करें।
6.	खरपतवार नियंत्रण	पेंडिमथेलिन नमक अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशी की 400ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के दर से बीजाई के 0-3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए । चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4-डी नामक दवा की 200 ग्राम/एकड़ या मेट्स्ल्फुरोन 1.6 ग्राम/ एकड़ या कारफेंट्राजोन 8 ग्राम/एकड़ नामक दवा को 120 लीटर पानी में का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है । संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफोप 24 ग्राम या फेनोक्षाप्रोप 40 ग्राम/एकड़ स्ल्फोस्ल्फुरोन की 10 ग्राम/ एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए । मिश्रित खरपतवारो के नियंत्रण के लिए 2,4-डी या मेट्स्ल्फुरोन को स्ल्फोस्ल्फुरोन या आईसोप्रोटुरोन के साथ बुआई के 30-35 दिनो बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी की अवस्था पर अनुक्रमिक छिड़काव किया जाना चाहिए ।

7. रोग एवं कीट नियंत्रण	डीबीडब्लू 222 पीला रतुआ और भूरा रतुआ के लिए प्रतिरोधी है परंतु यदि फसल मे पीला एवं भूरा रतुआ, करनाल बंट या चूर्णील फफूंदी रोग के लक्षण दिखाई दे तो उसके नियंत्रण हेतू प्रोपिकोनजोल नामक दवा की 0.1 प्रतिशत (1.0 मिली/लीटर) मात्रा का 15 दिनों के अंतराल पर का दो बार छिडकाव करना चाहिए । माहू या चेपा नमक कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाकलोपरिड 17.8 SL की 40 मी०ली०/ एकड़ मात्रा का छिदकाव करना चाहिए ।
8. सिंचाई	फसल मे सामान्यतः 5 से 6 सिंचाई की आवश्कता होती है । जिसमें पहली सिंचाई 20 से 25 दिन बाद तथा उसके बाद 20 दिनो के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए ।
9. कटाई	किस्म कटाई के लिए 139–150 दिन (औसत 143 दिन) में तैयार हो जाती हैं ।
10. अनुमानित उपज	किस्म की उपज 24.5 कु/प्रति एकड़ ।
11. उत्पादन क्षमता	32.8 कु/प्रति एकड़

डीबीडबल्यू 222 (करण नरेन्द्र) किस्म की विशेषतायें

विशेषता	अंतरण	औसत
बाली निकलने की अवधि	89–103	95
पकने की अवधि	139–150	143
पौधो की ऊंचाई द्धसेमीऋ	98–108	103
1000 दानो का वजन (ग्राम)	41–44	42

Karan Narendra (DBW222)

Wheat Variety for North Western Plain zone

Area of Adoption

Wheat variety Karan Narendra (DBW222) has been notified and released for cultivation by Central Sub-Committee on Crop Standards, Notification and Release of Varieties for Agricultural Crops (CVRC) vide notification number S.O. 99(E) dated 6th Jan., 2020 for Irrigated Timely Sown conditions of North western Plains Zone that includes Punjab, Haryana, Delhi, Rajasthan (except Kota and Udaipur divisions) and Western UP (except Jhansi division), parts of J&K (Jammu and Kathua distt.) and parts of HP (Una dist. and Paonta valley) and Uttarakhand (Tarai region).

Superior Performance in Yield

- DBW 222 recorded high mean yield of 61.3 q/ha and established yield superiority over HD 2967 (13.1%), DBW 88 (9.4%), DPW 621-50 (7.3%) WH 1105 (6.4%) and HD 3086 (4.0%) under three years of testing in the Co-ordination breeding trials.
- It has the yield potential of 82.1 q/ha.
- The variety has shown the minimum reduction in grain yield under late sown conditions which indicates wider adaptability for the varying sowing time and ability to perform better under terminal heat stress.

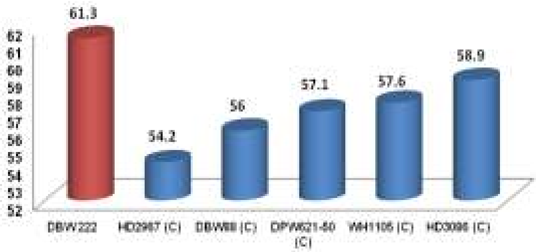

Disease Resistance

- It has shown resistance to prevalent pathotypes of yellow rust and leaf rust.
- It is highly resistant to Karnal bunt (9.1%) and loose smut (4.9%) as compared to the other prevalent varieties.

Grain Quality

- It is having high bread loaf volume (648), a good chapati-making score (7.5), better bread quality (8.24) and a biscuit spread factor of 8.45cm.
- It has excellent protein quality with a perfect Glu-1 score of 10

Package of practices of Karan Narendra (DBW 222)

1	Selection of field and/land preparation	Flat fertile soil, pre-sowing irrigation followed by ploughing with disc harrow, tiller and leveller at field capacity for optimum field condition
2	Seed treatment	Vitavax (Carboxin 37.5% + Thiram 37.5%) @ 2-3gm/kg seed.
3	Sowing time	November 5-25
4	Seed rate/sowing method	100 kg/ha. Line sowing with spacing of 20 cm between the rows.
5	Fertilizer doses	(for medium fertility soils) N: 120-150, P: 40-60, K: 40 Fertilizer application should be based on soil test
6	Weed control	• For the control of broadleaved weeds 2,4-D @500g/ha or metasulfron @4g/ha or carfentranzone @ 20g/ha can be sprayed using about 250 litres of water/ha. • For the control of grasses isoprutron @1000g/clodinafop @60g/ fenoxaprop @ 100g/ sulfosulfron @25g/ha should be used. In isoproturon resistant P. minor infested areas clodinafop or fenoxaprop or sulfosulfuron can be used. • For the control of complex weed flora combination of isopruturon with 2,4-D/metsulfuron or sulfosulfuron with metsulfuron can be applied at 30-35 DAS at sufficient soil moisture.
7	Pest and Disease control	• If rust symptoms appear apply propicanazole 0.1% (1 ml/L) at 15 days interval • 5% Aldrin or Chlordane dust with the soil just at the time of sowing or during preparation of the land for effective control of termites
8	Irrigation	5-6 irrigations. (At CRI*, tiller completion, late jointing, flowering, milk and dough stages).

9 Harvesting	Harvest and thresh as soon as fully ripe. The grain should be thoroughly dried before storage.
10 Mean Yield	24.5 q/acre
11 Potential Yield:	32.8 q/acre

Varietal Feature of Karan Narendra (DBW222)

Feature	Range	Average
Heading days	89-103	95
Maturity days	139-150	143
Plant height	98-108	103
1000 grains weight (g)	41-44	42

ਕਰਨ ਨਰੇਦਰ
(ਡੀ.ਬੀ.ਡਬਲਯੂ 222)

ਉਤੱਰ ਪਛੱਮੀ ਮੈਦਾਨੀ ਖੇਤਰ ਲਈ ਕਣਕ ਦੀ ਕਿਸਮ

ਉਤਪਾੱਦਕ ਖੇਤਰ

ਕਨਕ ਦੀ ਕਿਸਮ ਕਰਨ ਨਰੇਦਰ (ਡੀ.ਬੀ.ਡਬਲਯੂ 222) ਮਿੱਤੀ 6 ਜਨਵਰੀ 2020 ਨੂੰ ਫਸਲ ਮਾਪਦੰਡਾ ਉਤੇ ਕੇਂਦਰੀ ਸਬ-ਸਮਿਤੀ ਵਲੋਂ ਵਾਇਡ ਨੋਟੀਫਿਕੇਸ਼ਨ ਸੰਬਰ ਛ।+।99 (ਥ) 6 ਜਨਰਵੀ 2020 ਉਤੱਰ ਪੱਛਮੀ ਮੈਦਾਨੀ ਖੇਤਰ ਲਈ ਇਸ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ, ਹਰਿਆਣਾ, ਦਿੱਲੀ, ਰਾਜਸਥਾਨ (ਕੋਟਾ ਅਤੇ ਉਦੈਪੂਰ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ) ਪੱਛਮੀ ਹਿਮਾਚਲ ਪ੍ਰਦੇਸ਼, (ਓਨਾ ਅਤੇ ਪੋਟਾਂ ਘਾਟੀ) ਅਤੇ ਉਤਰਾਣਚਲ ਦਾ ਤਰਾਈ ਖੇਤਰ ਲਈ ਸਿਚਿਤ ਅਤੇ ਸਮੇ ਨਾਲ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਜਾਰੀ ਕਿਤੀ ਗਈ ਹੈ।

ਝਾੜ ਵਿੱਚ ਵਧੀਆ ਕਾਰਗੁਜ਼ਾਰੀ (ਪਰਫਾਰਮੈਸ਼)

ਡੀ.ਬੀ.ਡਬਲਯੂ 222 ਕਿਸਮ ਨੇ 61.3 ਕਵੰਟਲ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ ਔਸਤ ਪੈਦਾਵਾਰ ਦਰਜ ਦੀਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਕਿਸਮ ਦੇ ਤਿੰਨ ਸਾਲਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਜਨਨ ਪਰੀਖਣ ਦੇ ਦੋਰਾਨ ਅੱਗੇ ਲਿਖੀ ਕਿਸਮਾ ਉਤੇ ਉਤੱਮਤਾ ਦਰਜ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਹ ਕਿਸਮਾ ਨੇ ਐਚ-ਡੀ 2967 (13.1%) ਡੀ.ਬੀ.ਡਬਲਯੂ 88 (9.4%) ਡੀ.ਪੀ.ਡਬਲਯੂ 621-50 (7.3%) ਡਬਲਯੂ,ਐਚ 1105 (64.4%) ਐਚ.ਡੀ. 3086 (4.0%)

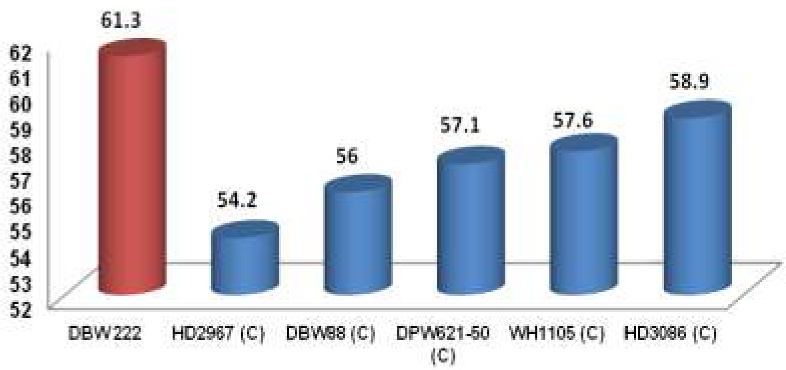

ਇਸ ਦੀ 82.1 ਕਿਵੰਟਲ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ ਝਾੜ ਦੀ ਵਦੋਵੱਦ ਸ਼ਮਤਾ ਹੈ।

ਇਸ ਕਿਸਮ ਨੇ ਪਛੇਤੀ ਬਿਜਾਈ ਵਿਚ ਪੈਦਾਵਾਰ ਵਿਚ ਘਟੋਘਟ ਕਮੀ ਦਰਜ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ, ਜੋ ਕਿ ਇਹ ਦਰਸ਼ਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਅਲਗ ਅਲਗ ਸਮੇ ਤੇ ਵੀ ਬੀਜਾਈ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।

ਰੋਗ ਪ੍ਰਤੀਰੋਧ

ਇਹ ਕਿਸਮ ਭੂਰੇ ਅਤੇ ਪੀਲੇ ਰਤੂਏ ਦੀ ਬੀਮਾਰੀ ਤੋ ਪ੍ਰਤੀਰੋਦੀ ਹੈ।

ਇਹ ਕਿਸਮ ਪੁਰਾਣੀ ਕਿਸਮਾਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤਿਯੋਗੀ ਕਿਸਮਾਂ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਕਰਨਾਲ ਬੰਟ (9.1×) ਤੇ ਖੁਲੀ ਕਾਂਗਿਆਰੀ (4.9×) ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੀਰੋਧੀ ਹੈ।

ਦਾਣੇ ਦੀ ਗੁਣਵਤਾ

ਇਸ ਵਿੱਚ ਬਰੇਡ ਲੋਫ ਵਾਲੀਅਮ (648) ਇਕ ਚੰਗੀ ਰੋਟੀ ਬਣਾਉਣ ਦਾ ਸਕੋਰ (7.5) ਰੋਟੀ ਦੀ ਬੇਹਤਰ ਗੁਣਵੱਤਾ (8.24) ਅਤੇ ਬਿਸਕੁਟ ਫੈਲਣ ਦਾ ਕਾਰਕ (8.45) ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਹੈ।

ਇਸ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਣਦਾਰ ਪ੍ਰੋਟੀਨ ਗੁਣਵੱਤਾ ਅਤੇ ਸੰਪੂਰਣ ਗਲੂਟਨ −1 ਦਾ ਕਰੋਰ 1● ਹੈ।

ਕਿਸਮ ਲਈ ਚੰਗਾ ਖੇਤਰ :– ਭਾਰਤ ਦੇ ਉਤੱਰ ਪਛੱਮੀ ਮੈਦਾਨੀ ਖੇਤਰ ਦੇ ਸਿਮਿਤ ਸਮੇ ਨਾਲ ਬੀਜੇ ਗਏ ਹਲਾਂਤਾ ਵਿੱਚ

ਖੇਤ ਅਤੇ ਜਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਦੀ ਚੋਣ :– ਸਮਤਲ ਉਪਜਾਓ ਮਿਟੀ, ਬਿਜਾਈ ਤੋ ਪਹਿਲਾ ਸਿੰਚਾਈ ਦੇ ਬਾਦ ਡਿਸਕ ਹੈਰੋ ਨਾਲ ਅਤੇ ਟਿਲਰ ਜੋਤ ਕੇ ਪਲੇਵਾਂ ਕਰ ਦਿਓ

ਬੀਜ ਦਾ ਉਪਚਾਰ :– ਵਿਟਾਟੈਕਸ (ਕਾਰਬੋਕਸਿਨ 37.5×ੈ ਕਿਸਮ 37.5×) ” 2–3 ਪਠੋਾਪ ਬੀਜ

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ :– ਨੰਵਬੰਰ 5–25

ਬੀਜ ਦਰ ਅਤੇ ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਤਰਿੱਕਾ :– 100 ਕਿਲੋ / ਹੈਕਟੇਅਰ ਕਤਾਰ ਤੋਂ ਕਤਾਰ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ 20 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦਾ ਫਾਸਲਾ ਹੋਣਾ ਚਾਹਿਦਾ ਹੈ।

ਪ੍ਰਾਪਤੀਯੋਗ ਉਪਜ ਦੇ ਪਧਰਾਂ ਦੇ ਨਾਲ

ਖਾਦ ਦੀ ਖੁਰਾਕ :– ਦਰਮਿਆਨੀ ਉਪਜਾਓ ੱਕਤੀ ਲਈ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ 120–150ਾਪ, ਫਾਸਫੋਰਸ 40–60ਾਪ, ਪੋਟਾੱ 40–60ਾਪ, ਖਾਦ ਦੀ ਵਰਤੋ ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਟੈਸਟ ਦੇ ਅਧਾਰ ਤੇ ਹੋਣੀ ਚਾਹਿਦੀ ਹੈ।

ਖਰਪਤਵਾਰ ਨਿਯੰਤਰਣ :– ਚੋੜੀ ਪੱਤੀ ਵਾਲੇ ਖਰਪਤਵਾਰ ਕੰਟਰੋਲ ਲਈ 2–4 ਣ ” 500ਪੀ.ਫ।ਅਤੇ ਮੈਟਾਸਲਫਰਾਨ ”4 ਪੀ.ਫਵੇ ਕਾਰਫੈਇਗਜੋਨ ”20ਪੀ.ਫਵੇ ਲਗਭਗ 250 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੀ ਵਰਤੋ ਕਰਕੇ ਛਿੜਕਾਵ ਕਿਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਘਾਹ ਵਾਲੇ ਖਰਪਤਵਾਰ ਦੇ ਨਿਯੰਤਰਣ ਲਹੀ ਆਾਈਸੋਪ੍ਰੋਟੋਗਣ ”25ਪੀ.ਫਵੇ ਛਿੜਕਾਵ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਜਿਥੇ ਆਾਈਸੋਪ੍ਰੋਟ੍ਰੋਗਣ ਦਾ --- ਤੇ ਅਸਰ ਨਾ ਹੁੰਦਾ ਹੋਵੇ ਉਥੇ ਕਲੋਡੀਟਾਫੋਪ ਜਾਂ ਫਕੋਰਸਾਪ੍ਰੋਪ ਜਾ ਸਲਫਾਸਲਟੂਗਨ ਦਾ ਉਪਯੋਗ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਕਟੀਲਦਾਰ ਖਰਪਤਵਾਰ ਦੇ ਕੰਟਰੋਲ ਲਈ ਆਈਸੋਪ੍ਰੋਟੋਗਣ ਦੇ ਨਾਲ 2–4 ਣ ਜਾਂ ਮੈਟਾਮਲਫੂਗਨ ਜਾਂ ਸਲਫੋਸਲਫੂਗਨ ਦੇ ਨਾਲ ਮੈਟਾਸਮਫੂਗਨ ਮਿਲਾ ਕੇ ਬਿਜਾਈ ਦੇ 30–35 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਜਦੋ ਖੇਤ ਚੰਗੀ ਨਮੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਛਿੜਕਾਂਵ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।

ਕੀਟ ਅਤੇ ਬੀਮਾਰੀ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ :– 5× ਐਲਡਰੀਨ ਜਾਂ ਕਲੋਰਿਡੇਨ ਦਾ ਧੂੜਾ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਮਿਲਾਕੇ ਬਿਜਾਈ ਦੇ ਸਮੇ ਜਾਂ ਖੇਤ ਤਿਆਰ ਦੇ ਦੋਰਾਨ ਡਿਮਕ ਦੇ ਕੰਟਰੋਲ ਲਈ ਇਸਤਮਾਲ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।

ਸਿੰਚਾਈ :– ਇਸ ਵਿੱਚ 5–6 ਸਿੰਚਾਈ ੇ(CRI), ਟਿਲਰ ਬਣਣ ਤੇ, ਦੇਰ ਨਾਲ ੱਮਲ ਹੋਣ ਤੇ, ਫੁੱਲ ਆਣ ਤੇ, ਦੁਜਾ ਸਟੇਜ ਤੇ ਅਤੇ ਡਗ (ਆਣ) ਸਟੇਜ ਤੇ ਪਾਣੀ ਦੇ ਸਦਕੇ ਹਾਂ।

ਕਟਾਈ :– ਜਦੋ ਫਸਲ ਪੂਰੀ ਤਰਾਂ ਪੱਕ ਕੇ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਟਾਇਮ ਨਾਲ ਕਟਾਈ

ਅਤੇ ਗਰਾਈ ਕਰ ਲੈਣੀ ਚਾਹਿਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਭੰਡਾਰ ਕਾਦੇ ਦਾਣੇ ਪੂਰੀ ਤਰਾਂ ਸੁਖਾ ਲੇਣੇ ਚਾਹਿਦੇ ਹਨ।

ਙਵ੧ ਸਟੇਜ, ਕੱਲੋ ਬਣਣ ਦੀ ਸਟੇਜ, ਬੂਟੇ ਵਿੱਚ ਗਾਂਠ ਬਣਣ ਦੀ ਸਟੇਜ ਫੁੱਲ ਆਣ ਦੀ ਸਟੇਜ, ਦੁਦ ਸਟੇਜ ਅਤੇ ਦਾਣਾਂ ਪਕਣ ਦੀ ਸਟੇਜ

ਔਸਤ ਪੈਦਾਵਾਰ :- 24।5 ਕੁਵੰਟਲ ਏਕੜ

ਵਦੋਵਦ ਪੈਦਾਵਾਰ ਦੀ ੱਮਤਾ :- 32।8 ਕੁਵੰਟਲ ਏਕੜ

ਕਨਕ ਨਰੇ[ਦਰ ਦੀ ਵਖੋ ਵੱਖਰੀ ਵਿੱੱਤਾ

ਗੁਣ	ਵਦਿਆ (ਰੇਜ)	ਔਸਤ
ਬਾਲਿਆ ਲਿੱਕਣ ਦੇ ਦਿਨ	89-103	95
ਪੱਕਣ ਦੇ ਦਿਨ	139-150	143
ਬੂਟੇ ਦੀ ਉਚਾਈ	98-108	103
1000 ਦਾਣੇ ਦਾ ਭਾਰ	41-44	

ਸ[ਕਲਲ ਅਤੇ ਸੰਪਾਦਿਤ :-

ਸੀ ਐਨ ਮਿੱਰਾ, ਅਮਿਤ ੱਰਮਾ, ਰਨੀਫ ਖਾਨ, ਸਤੀੱ ਕੁਮਾਰ, ਐਸ ਕੇ ਸਿੰਘ, ਓਮ ਪ੍ਰਕਾੱ, ਮਦਨ ਲਾਲ, ਜੀ ਪੀ ਸਿੰਘ

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

ICAR-Indian Institute of Wheat and Barley Research
Karnal-132001, India